संगीत मार्तण्ड प्रणवरंग जी का शैक्षिक आयाम

प्रीतेश आचार्य

संगीतमार्तण्ड पं0 ओमकारनाथ ठाकुर प्रणवरंग ने 1950 में **श्री कला संगीत भारती** की स्थापना को मूर्त रुप दिया और योग्य शिक्षकों सहित उपयुक्त पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तक बनाने में संलग्न हुए जिसमें सीखने वालो ंको लय, स्वर, ताल राग के संस्कारों का उपयुक्त बीजारोपण हों सकें। श्री काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रणवरंग जी के प्रधान शिष्य पं0 बलवंत रांय भट्ट भावरंग के अनुसार[1] दीर्घ प्रयास के बाद संन् 1950, शनिवार का दिन ' कला संगीत भारती' उर्फ 'कालेज आफ म्युजिक एण्ड फाइन आर्ट्स' के उद्घाटन के लिये निश्चित हुआ। उस दिन संध्या समय रूइया छात्रावास के ऊपर के बड़े कक्ष में सभा हुई कुल गीत, ईश वंदना के पश्चात् पंडित जी का धीरे गंभीर व्याखान और रसमय गायन हआ, जिसमें उन्होने जैजैवंती कबीर साहब का भजन 'रे दिन कैसे कटि हैं' गाया। अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन के अध्यक्ष माननीय श्री दामोदर दास खन्ना उर्फ लालाबाबूजी का प्रासंगिक वक्तव्य हुआ। तत्कालीन कुलपति महोदय माननीय श्री गोंविद मालवीय जी के द्वारा सभा से निवनियुक्त अध्यापको का परिचय कराया गया। सन् 1950 के अपरान्ह् तीन बजे से 'श्री कला संगीत भारती' में अध्यापन कार्य प्रारंभ हुआ।